8 वृक्ष

कविता के उद्देश्य

- पर्यावरण संरक्षण
- वृक्षारोपण
- प्राकृतिक संतुलन
- बीज से वृक्ष बनने की प्रक्रिया

अंकुर मिट्टी में सोया था
सपने में खोया था
नन्हा बीज हवा ने लाकर
एक जगह बोया था।

तभी बीज ने ली अँगड़ाई
देह ज़रा-सी पाई
आँख खोलकर बाहर आया
दुनिया पड़ी दिखाई।

खाद मिली, पानी भी पाया
ऐसे जीवन आया
ऊपर बढ़ा इधर, धरती में
नीचे उधर समाया।

तने, डालियाँ, पत्ते आए
और फूल मुसकराए
नन्हा बीज वृक्ष बन करके
धरती पर लहराए।

अध्यापन संकेत : बच्चों को बताइए कि किस प्रकार एक बीज एक वृक्ष बन जाता है। उन्हें पेड़-पौधों से होने वाले लाभों के बारे में बताइए।

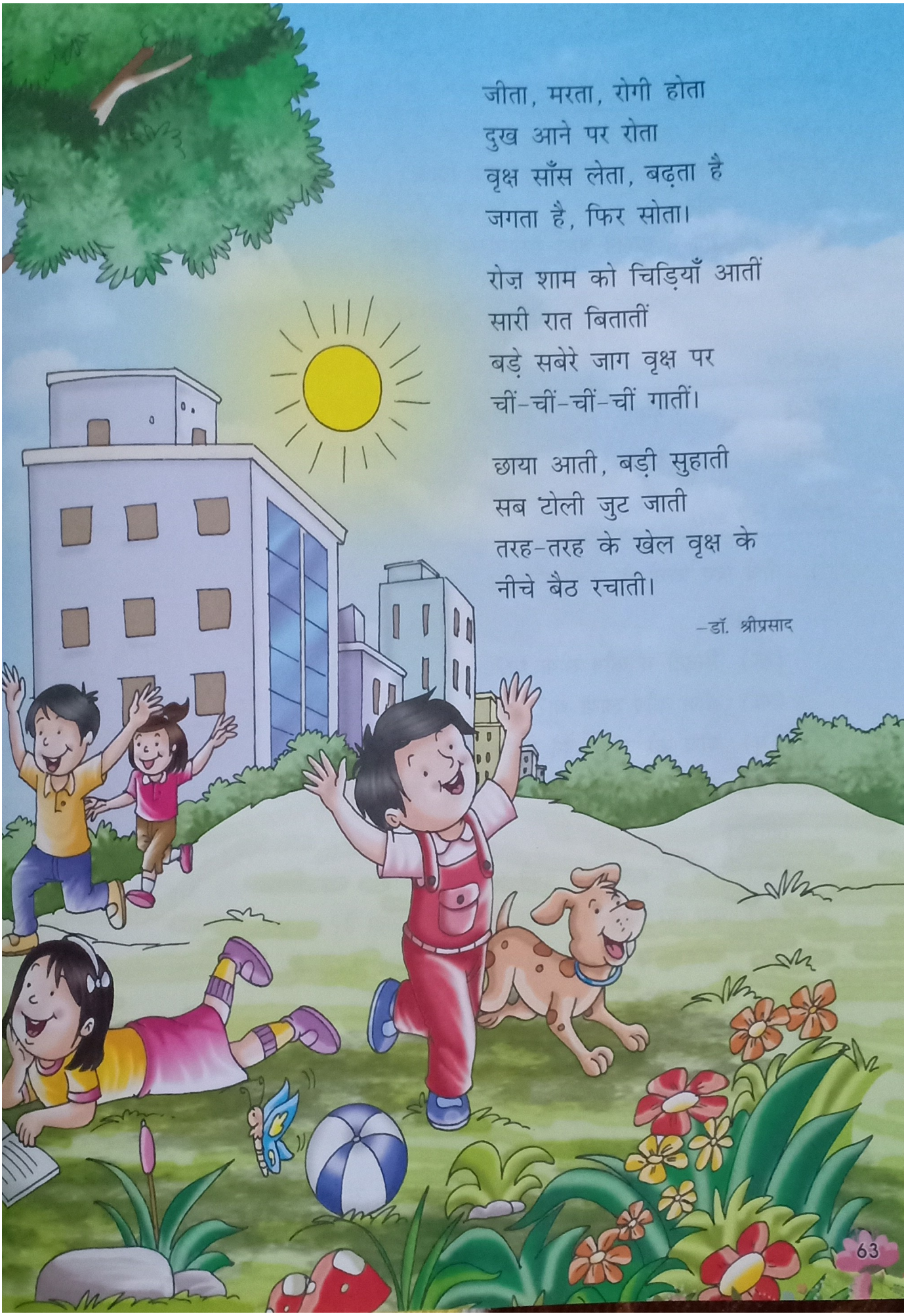

जीता, मरता, रोगी होता
दुख आने पर रोता
वृक्ष साँस लेता, बढ़ता है
जगता है, फिर सोता।

रोज़ शाम को चिड़ियाँ आतीं
सारी रात बितातीं
बड़े सबेरे जाग वृक्ष पर
चीं-चीं-चीं-चीं गातीं।

छाया आती, बड़ी सुहाती
सब टोली जुट जाती
तरह-तरह के खेल वृक्ष के
नीचे बैठ रचाती।

—डॉ. श्रीप्रसाद